आखिर आए असराफील, उड़ावसी बजाए सूर।
फेर करसी कायम, बजाए खुदाए का नूर।। ४४ ।।

आखिर में असराफील (जागृत बुद्धि का फरिश्ता) जागृत बुद्धि के ज्ञान का सूर फूंकेगा तो बड़े-बड़े पहाड़ के समान धर्माचार्य ज्ञानियों के झूठे ज्ञान के अहंकार टूट जाएंगे और फिर दूसरा सूर फूंकने से पारब्रह्म के दर्शन कराकर सबको बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

गावेगा कुरान को, असराफील सूर कर।
तब फिरसी सब फरिस्ते, एह बात चित्त धर।। ४५ ।।

असराफील फरिश्ता जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का उजाला करेगा तब सब देवी-देवता योगमाया की अव्याकृत की बहिश्त में जाएंगे।

जब जहूर जाहेर हुआ, कलाम अल्ला का नूर।
तब ए होसी कायम, ले याही का जहूर।। ४६ ।।

जब तारतम वाणी से छिपे भेदों का रहस्य फैलेगा तब सारी दुनियां को जानकारी मिल जाएगी और फिर वह सब अखण्ड सुख को प्राप्त करेंगे।

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेदी बिना न होए।
सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए।। ४७ ।।

कुरान और सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के बिना और कोई नहीं खोल सकता, ऐसा कुरान में जब स्वयं पारब्रह्म ने लिखवा दिया तो फिर दूसरा कोई कैसे खोल सकता है?

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ८१९ ।।

सूरत मीजान की

केहेती हों उमत को, सुनसी सब संसार।
मकसूद तिन का होएसी, जो लेसी एह विचार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते कहती हूं जिसे सारा संसार सुनेगा। पर लाभ उसी को ही होगा जो सुनकर इसे विचारेगा।

फिरके सबों ने यों कह्या, ए जो दुनियां चौदे तबक।
ढूंढ़ ढूंढ़ के हम थके, पर पाया नाहीं हक।। २ ।।

सभी धर्मग्रन्थों ने कहा कि चौदह लोकों के देवी-देवता और ज्ञानी लोग सभी पारब्रह्म को ढूंढ़कर थक गए, परन्तु पारब्रह्म किसी को नहीं मिला।

वेद कतेब पढ़ पढ़ थके, केहे केहे थके इलम।
कह्या तिनों मुख अपने, ठौर कायम न पाया हम।। ३ ।।

वेद और कतेब को पढ़-पढ़कर लोग थक गए। ज्ञान की चर्चा करके थक गए। उन्होंने भी अपने मुख से स्पष्ट कहा कि निराकार के पार बेहद अखण्ड भूमि का पता नहीं लगा।

मेहेर करी मोहे मेहेबूबें, रूह अल्ला मिले मुझ।
खोल दिए पट अर्स के, जो बका ठौर थी गुझ।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे ऊपर धाम-धनी ने कृपा की जिससे श्यामाजी मुझे मिले और तारतम वाणी से अखण्ड परमधाम तक के दरवाजे खोल दिए जो आज तक छिपे थे।

Nijanand App

इलम दिया मोहे लदुन्नी, आई असल अकल।
सेहेरग से नजीक, पाया अर्स असल।। ५ ।।

मुझे जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी और अपने घर को (परमधाम को) सेहेरग से (प्राणनली से) नजदीक पाया।

और मेहेर महंमद की, खुली हकीकत।
पाई साहेदी दूसरी, हक की मारफत।। ६ ।।

और रसूल मुहम्मद की कृपा से घर की हकीकत का पता चला और घर की पहचान हो गई। दूसरी गवाही कुरान से मिलने से हकीकत का पता चला।

पाई इसारतें रमूजें, बीच अल्ला कलाम।
सक जरा ना रही, पाया कायम आराम।। ७ ।।

कुरान में पारब्रह्म श्री अक्षरातीत ने जो गुझ (गुप्त) इशारतें कही थीं उनके छिपे भेदों के रहस्य का पता चला जिससे अखण्ड सुख प्राप्त हुआ और सब संशय मिट गए।

अब करूं बका जाहेर, वास्ते अर्स उमत के।
कहूं अर्स और खेल की, ज्यों बेवरा समझें ए।। ८ ।।

अब ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते अखण्ड परमधाम को जाहिर करती हूं। अब मैं परमधाम और माया के खेल की हकीकत बताती हूं जिससे दोनों की हकीकत समझ में आ जाए।

अब लीजो ए रोसनी, जो अरवा अर्स के।
ए निमूना देखिए, ज्यों सुध होए हिरदे।। ९ ।।

जो कोई परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हो, वह इस ज्ञान को ग्रहण करे और दोनों के नमूने देखकर पहचान करे।

नासूत और मलकूत का, निमूना देखकर।
ए बल दिल में लेय के, देखो अर्स जानवर।। १० ।।

मृत्युलोक और बैकुण्ठ के नमूनों की शक्ति को देखकर अपने दिल में परमधाम के जानवरों के बल को देखो।

एक जानवर अर्स का, मैं तौल्या तिन का बल।
क्यों कहूं तफावत, ओ फना ए नेहेचल।। ११ ।।

मैंने परमधाम के एक जानवर की शक्ति को तौला। अब उनके फर्क को कैसे बयान करूं? नासूत और मलकूत (मृत्युलोक और बैकुण्ठ) नाशवान हैं और परमधाम अखण्ड है।

लाख ब्रह्मांड की दुनी का, है हिकमत बल बुद्ध जेता।
दे दिल नजरों तौलिया, मैं लिया अंदर में एता।। १२ ।।

दुनियां के लाखों ब्रह्माण्ड की बुद्धि और ताकत को मैंने दिल की नजरों से तौला और यह समझा।

ज्यों कबूतर खेल के, हुए अलेखे इत।
आदमी एक नासूत का, दोऊ देखो तफावत।। १३ ।।

जैसे खेल के कबूतर बेशुमार बन जाते हैं और वह झूठे होते हैं। इस मृत्युलोक के आदमी के सामने इन दोनों की तुलना करो।

Nijanand App

कोई केहेसी ए कछुए नहीं, और ए तो हैं जीवते।
ए जवाब है तिनको, देखो पटंतर ए।। १४ ।।

कोई कहेगा कि कबूतर कुछ नहीं है और यह सब संसार के लोग जिन्दा हैं, उनका एक ही उत्तर है, उसके अन्तर को देखो।

आगूं कायम अर्स के, है चौदे तबक यों कर।
ज्यों आगूं नासूत दुनीय के, ए खेल के कबूतर।। १५ ।।

अखण्ड परमधाम के सामने यह सारा संसार बाजीगर के उसी कबूतर की तरह है, जिस तरह से यहां संसार में संसार के आदमी इस खेल के कबूतर हैं।

जो कछु पैदा कुंन से, मैं तिन का देत निमूना।
सो क्यों कही जाए कायम को, ज्ो वस्त है झूठ फना।। १६ ।।

जो सृष्टि कुंन कहने से पैदा हुई है, मैं उसके नमूने को कहती हूं। यह सृष्टि मिट जाने वाली झूठ है, इसलिए इसकी तुलना अखण्ड से कैसे की जाए?

तो कह्या सब्दातीत को, हद सब्द पोहोंचत नाहें।
ऐसे झूठ निमूना देय के, पछतात हों जीव माहें।। १७ ।।

इसलिए कहा है कि उस अखण्ड पारब्रह्म जो शब्दातीत है उसके यहां हद के मिट जाने वाले संसार के शब्द नहीं पहुंचते और इसलिए झूठा नमूना देकर पश्चाताप हो रहा है।

कछुक सुख तो उपजे, हिस्सा कोटमां पोहोंचे तित।
एक जरा न पोहोंचे हक को, मैं ताथें दुख पावत।। १८ ।।

यदि यह नमूना अखण्ड के करोड़वें हिस्से के बराबर भी होता, तो भी कुछ समझाने का सुख होता। संसार का एक जर्रा भी पारब्रह्म को नहीं पहुंचता, इसलिए मुझे दुःख हो रहा है।

मैं देख्या सुन्या दुनीय में, सो सब फना वस्त।
इन झूठे आकार से, क्यों होए कायम सिफत।। १९ ।।

मैंने जो कुछ दुनियां में देखा और सुना वह सब झूठी वस्तुएं हैं। नाशवान हैं। मैं भी इस झूठे शरीर से कैसे अखण्ड का वर्णन करूं?

ताथें सिफत मैं क्यों करूं, अर्स अजीम की ख्वाब में इत।
एता भी कहूं मैं हुकमें, और केहेने वाला न कित।। २० ।।

अखण्ड परमधाम के सुखों की सिफत मैं सपने के संसार में कैसे बताऊं? इतना भी जो कुछ कह रही हूं पारब्रह्म धनी धाम के हुकम से कह रही हूं, क्योंकि दूसरा कोई और कहने वाला नहीं है।

ताथें अर्स और दुनी के, तफावत जानवर।
कायम और फना की, क्यों आवे बराबर।। २१ ।।

अखण्ड परमधाम के जानवर और इस सारी दुनियां का अन्तर कैसे बराबर हो सकता है, जबकि यह नाशवान और परमधाम अखण्ड है।

चुप किए भी न बने, समझाए ना बिना मिसल।
पसु पंखी अर्स और खेल के, देखो तफावत बल।। २२ ।।

चुप भी रहा नहीं जाता और बिना नमूने के समझाया नहीं जाता। अखण्ड परमधाम के पशु-पक्षी और संसार के पशु-पक्षियों का अन्तर देखो।

Nijanand App

इत अंगद बाल सुग्रीव, गरुड़ जाबूं हनुमान।
ए उठावें पहाड़ को, ऐसे कहे बलवान।। २३ ।।

यहां पर अंगद, बालि, सुग्रीव, गरुड़, जामवंत और हनुमान इतने बलवान कहे हैं कि पहाड़ को भी उठा लेते हैं।

लोक नासूती एह बल, कहे जो जानवर।
राम कृष्ण इनके सिर, तो कहे ऐसे जोरावर।। २४ ।।

मृत्युलोक के जानवरों की यह ताकत है। इनके ऊपर भगवान राम और भगवान कृष्ण की कृपा होने से ही यह इतने ताकतवर हैं।

अब कहूं मलकूत की, बल की हकीकत।
लोक जिमी आसमान के, ए देखो तफावत।। २५ ।।

अब बैकुण्ठ के जानवरों की हकीकत को देखो। इससे मृत्युलोक और बैकुण्ठ की ताकत का अन्तर पता चलेगा।

बोझ उठावें ब्रह्मांड को, ऐसे जोरावर।
गरुड़ बल ऐसा रखे, चले विष्णु मन पर।। २६ ।।

बैकुण्ठ का गरुड़ पक्षी सारे ब्रह्माण्ड का बोझ उठा लेता है। ऐसा ताकतवर पक्षी विष्णु के मन माफिक चलता है।

देख बल इन खावन्द का, जो मलकूत में बसत।
कोट ब्रह्मांड नए कर, अपने बन्दों को बकसत।। २७ ।।

अब बैकुण्ठ में रहने वाले गरुड़ के मालिक भगवान विष्णु की ताकत को देखो जो करोड़ों नए ब्रह्माण्ड बनाकर अपने सेवकों को दे देते हैं।

ओ तो भए नासूत में, मलकूत है तिन पर।
ए तो दोऊ फना मिने, ज्यों लेहेरें उठें मिटें सागर।। २८ ।।

यह तो मैंने मृत्युलोक और बैकुण्ठलोक जो इसके ऊपर है की तुलना करके बताया है। यह दोनों मृत्युलोक और बैकुण्ठ क्षर ब्रह्माण्ड के अन्दर नाशवान हैं। जिस तरह से सागर की लहरें उठती और मिटती हैं वैसे यह संसार बनते और मिट जाते हैं।

नासूती अवतार के, ऐसे बंदे जोरावर।
सो मलकूत के एक खिन में, कई कोट जात मर मर।। २९ ।।

मृत्युलोक के अवतार भगवान राम और भगवान कृष्ण के सेवक इतने बलशाली हैं कि यह सभी बैकुण्ठ के एक पल में करोड़ों बनकर मिट जाते हैं।

नासूत तले मलकूत के, ज्यों लेहेर सागर।
तले इन मलकूत के, नासूत है यों कर।। ३० ।।

बैकुण्ठ के नीचे मृत्युलोक सागर की लहरों के समान है।

दरिया ला मकान का, तिनकी लेहेर मलकूत।
तिन से लेहेर उठत है, सो जानो नासूत।। ३१ ।।

अब निराकार सागर है। सागर में बैकुण्ठ एक लहर के समान है। बैकुण्ठ सागर के सामने मृत्युलोक एक लहर के समान है।

Nijanand App

ए तले ला मकान के, दोऊ फना के माहें।
ए बल मलकूत नासूत, पर जरा कायम नांहें।। ३२ ।।

निराकार के नीचे मलकूत और नासूत (बैकुण्ठ और मृत्युलोक) दोनों नाशवान हैं, इसलिए बैकुण्ठ और मृत्युलोक की शक्ति कुछ भी नहीं है।

विष्णु ब्रह्मा रुद्र की, साहेबियां बुजरक।
ए चौदे तबक की दुनियां, जाने याही को हक।। ३३ ।।

चौदह लोकों की दुनियां में विष्णु, ब्रह्मा और शंकर भगवान को ही सभी मालिक मानकर अखण्ड समझते हैं।

बिना हिसाबें उमतें, करें सिफतें अनेक।
सो सारे यों केहेवहीं, हम सिर एही एक।। ३४ ।।

इनके पूजने और गुण गाने वालों के अनेक धर्म और सम्प्रदाय हैं जो सभी यह कहते हैं कि हमारा मालिक तो यही है (तीनों में से कोई एक जिसके वह पूजक हैं)।

खुदा याही को जानहीं, जो मलकूत में त्रैगुन।
कदी ले इलम आगूं चले, गले ला मकान जो सुंन।। ३५ ।।

बैकुण्ठ धाम में ब्रह्मा, विष्णु और शंकर हैं, उन्हें दुनियां वाले खुदा मानते हैं, इनमें यदि कोई ज्ञान से आगे बढ़ा तो शून्य निराकार में जाकर गल जाता है।

ए जो खावंद मलकूत के, सो ढूंढ़ें हक को अटकल।
रात दिन करें सिफतें, पर पावें नहीं असल।। ३६ ।।

यह जो बैकुण्ठ के मालिक (त्रिदेव) हैं वह पारब्रह्म को अपनी अटकल से ढूंढ़ते हैं। यह रात-दिन अपने अनुमान से ही पारब्रह्म की तारीफ के गीत गाते हैं, परन्तु वह कौन है, कहां पर है, इसका ज्ञान उनको नहीं है।

ऐसे बिना हिसाबें मलकूत, सो तीनों फरिस्ते समेत।
सिफत कर कर आखिर, कहे नेत नेत नेत।। ३७ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, शंकर सहित करोड़ों ब्रह्माण्ड बैकुण्ठ की सिफत करके आखिर थक गए और नेति-नेति (यहां नहीं है, यहां नहीं है) कह दिया।

करें कोट मलकूती सिफतें, देख नूरजलाल कुदरत।
तो पट आड़ा ना टरे, कई कर कर गए सिफत।। ३८ ।।

करोड़ों बैकुण्ठ अक्षर ब्रह्म की योगमाया (कुदरत, मूल प्रकृति) की सिफत करते हैं, परन्तु मोह तत्व के परदे को उलंघ नहीं सके, केवल गुण गाते रह गए।

ए सबें सिफतें करें, पर पोहोंचें न नूरजलाल।
ए पैदा ला मकान की, याको पोहोंचे ना फैल हाल।। ३९ ।।

इन सबकी सिफतें अक्षर ब्रह्म को नहीं पहुंचतीं। यह सब त्रिदेव और संसार मोह तत्व से पैदा हुए हैं, इसलिए इनकी मन और बुद्धि अखण्ड को नहीं पहुंचती।

Nijanand App

इन विध चले जात हैं, आखिर अव्वल से।
यों सिफत कर कर गए, पर नूर न पाया किनने।। ४० ।।

शुरू से आखिर तक सारे इस तरह पारब्रह्म के गुण गाते चले जाते हैं, परन्तु अक्षर तक को किसी ने नहीं पाया।

अब देखो बल महंमद का, दई दुनियां को सरीयत।
कह्या आखिर रब आवसी, खोलसी हकीकत।। ४१ ।।

अब रसूल साहब की ताकत को देखो जिन्होंने दुनियां को खुदा की शरीयत पर चलना सिखाया और कहा कि अन्त समय में पारब्रह्म आएंगे और मैं जो कुरान लाया हूं इसके छिपे भेदों की हकीकत खोलकर बताएंगे।

आवसी उमत अर्स से, ए खेल को देखन।
करें हक को जाहेर, सब का एह कारन।। ४२ ।।

परमधाम से ब्रह्मसृष्टि की जमात खेल देखने आएंगी। जिनके वास्ते यह खेल बनाया है वही पारब्रह्म को जाहिर करेंगे।

कायम वतन करें जाहेर, करें जाहेर नूरजलाल।
करें उमत अर्स की जाहेर, करें जाहेर नूरजमाल।। ४३ ।।

वह अखण्ड परमधाम को, अक्षरधाम को, ब्रह्मसृष्टियों को तथा पारब्रह्म अक्षरातीत को जाहिर करेंगे।

जब ए करें जाहेर, देवें पट उड़ाए।
भिस्त दे सबन को, लेवें कयामत उठाए।। ४४ ।।

जब मोमिन इनको जाहिर करेंगे तो सारे परदे हट जाएंगे और सबके सारे संशय मिट जाएंगे। फिर सारे संसार को मिटाकर सब जीवों को बहिश्तों में अखण्ड कर देंगे।

ए सब नूर महंमद के, महंमद नूर खुदाए।
तो आखिर आए सबन को, दई हैयाती पोहोंचाए।। ४५ ।।

यह सब श्यामाजी महारानी के नूर से होगा। श्यामा महारानी श्री राजजी महाराज के नूर से उनके अंग हैं जो आखिरत में आकर सबको अखण्ड कर देंगे।

बारे हजार उमत की, रूहें जो इसदाए।
जबराईल के पर पर, दोऊ बाजू बैठाए।। ४६ ।।

मूल इसदाए से, अर्थात् शुरू से ही जो बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों की जमात है को जबराईल फरिश्ते के दोनों परों पर बिठाकर घर ले जाएंगे।

आप बैठे बीच में, ले अपनी तीन सूरत।
ला मकान उलंघ के, नूर पार पोहोंचत।। ४७ ।।

आप पारब्रह्म अक्षरातीत अपनी तीनों सूरतों (बसरी, मलकी और हकी) को बीच में बिठाकर निराकार को पार करके अक्षर के पार अपने घर लेकर जाएंगे।

ऐसा जोस बल महंमद का, जबराईल जानवर।
नासूत मलकूत ला परे, पोहोंचे अपने घर।। ४८ ।।

ऐसा बल मुहम्मद का है। जबराईल फरिश्ते की इतनी बड़ी ताकत है कि मृत्युलोक से बैकुण्ठ और बैकुण्ठ से निराकार से परे अपने घर परमधाम पहुंचा देता है।

Nijanand App

एह बल महंमद के, जानवर का जान।
दूजी गिरो फरिस्ते, पोहोंचाई नूर मकान।।४९ ।।

मुहम्मद के जानवर जबराईल की इतनी बड़ी ताकत है कि वह दूसरी ईश्वरीसृष्टि की जमात को भी अक्षरधाम पहुंचाएगा।

गिरो फरिस्ते इत रहे, जबराईल मकान।
एह आगे ना चल सके, याको याही ठौर निदान।।५० ।।

ईश्वरीसृष्टि और जबराईल यहीं अपने मकान में रह जाएंगे। यह आगे नहीं जा सकेंगे। इनका यहीं ठिकाना है।

जो रूहें अर्स अजीम की, खासल खास उमत।
ले पोहोंचे नूरतजल्ला, महंमद तीन सूरत।।५१ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वही खासल खास उम्मत हैं। वह मुहम्मद की तीनों सूरतों सहित अक्षरातीत के धाम पहुंचेंगी।

खेल देख उमत फिरी, भिस्त दे सबन।
इतहीं बैठे पोहोंचहीं, अपने कायम वतन।।५२ ।।

यह खेल देखकर सबको अखण्ड बहिश्तों में कायम करेंगे। ब्रह्मसृष्टियां अपने घर वहीं मूल-मिलावे पहुंच जाएंगी तो उनको पता लगेगा कि हमने यहां मूल-मिलावे में बैठे-बैठे ही खेल देखा है।

ए जो दुनियां चौदे तबक, ताए जबराईल जोस देत।
ए झूठों इस्क देखाए के, कायम सबों कर लेत।।५३ ।।

इस चौदह तबकों की दुनियां को जबराईल ही शक्ति देता है और इस मिटने वाले संसार को प्रेम लक्षणा भक्ति दिखाकर अखण्ड कर देता है।

क्यों कहूं बल जबराईल, जिन सिर हैं महंमद।
ए सिफत इन बल बुध की, क्यों कहे जुबां हद।।५४ ।।

जबराईल की ताकत का वर्णन कैसे करूं क्योंकि इनको मुहम्मद साहब की शक्ति प्राप्त है। इसकी (जबराईल की) सिफत यहां की बल और बुद्धि से कैसे कहूं, क्योंकि मेरी जबान हद की व मिटने वाली है।

कायम जिमी अर्स की, सांची जो साबित।
पसु पंखी इन भोम के, जो हमेसा बसत।।५५ ।।

परमधाम की भूमि अखण्ड है और सदा सत्य है। इस भूमि के पशु, पक्षी जो भी यहां रहते हैं, अखण्ड हैं।

कायम जिमी का खावंद, जिन को कहिए हक।
तिन जिमी के जानवर, सो होए तिन माफक।।५६ ।।

इस अखण्ड भूमि के मालिक को अक्षरातीत पारब्रह्म कहते हैं। इसलिए उस जमीन के जानवर भी उन्हीं के माफिक हैं।

बिना हिसाबें जानवर, पसु बिना हिसाब।
ए बल दिल में लेय के, तौलो निमूना ख्वाब।।५७ ।।

यहां बेशुमार जानवर और बेहिसाब पशु हैं। इनकी ताकत को दिल में विचार करके संसार की तरफ फिर तौलकर देखो।

Nijanand App

कोट इंड की दुनीय का, कूवत बल हिकमत।
अपार अर्स के जानवर, क्यों कहूं बल बुध इत।।५८।।

करोड़ों ब्रह्माण्डों की शक्ति और कला को देखो। परमधाम के बेशुमार जानवरों के बल और बुद्धि को यहां बैठे कैसे बताऊं?

अलेखे बल इन का, क्यों देऊं निमूना इन।
झूठे दम कहे ख्वाब के, जाको पेड़ ला मकान सुंन।।५९।।

अर्श के जानवरों की ताकत बेशुमार है जिसका यहां कोई नमूना नहीं है। संसार के जीव जिनकी उत्पत्ति निराकार और शून्य से है, वह सब सपने के हैं।

ए बल सब्दातीत को, सो सांचे हैं सूर।
और बल फना मिने, इत तिन की क्या मजकूर।।६०।।

अर्श के जानवरों की शक्ति शब्दों में नहीं आती। वह सदा अखण्ड और बहादुर हैं। इस क्षर ब्रह्माण्ड (मिट जाने वाले संसार) की ताकत की क्या हस्ती कि उनसे इसकी तुलना करूं?

सांच झूठ पटंतरो, कबहूं कह्यो न जाए।
सांच हक झूठी दुनियां, ए क्यों तराजू तौलाए।।६१।।

अखण्ड और मिटने वालों का अन्तर कहा नहीं जा सकता। पारब्रह्म सत है। दुनियां झूठी है। दोनों को एक तराजू में कैसे तौला जा सकता है?

मलकूत और नूर के, क्यों कहूं तफावत।
झूठी दुनी बका हक को, ए कैसी निसबत।।६२।।

बैकुण्ठ और अक्षर का अन्तर कैसे बताऊं? दुनियां झूठी है और अक्षर अखण्ड है। इनकी कैसी निसबत, कैसी तुलना?

कोट मलकूत नासूत, एक पल में करें पैदाए।
सो नूर नजर देख के, एक खिन में दें उड़ाए।।६३।।

करोड़ों मृत्युलोक और बैकुण्ठ अक्षर ब्रह्म अपने हुकम से एक पल में पैदा करके मिटा देते हैं।

ओ जाने हम कदीम के, आद हैं असल।
कई चले जात हैं मलकूत, नूरजलाल के एक पल।।६४।।

संसार के जीव जो अक्षर ब्रह्म के हुकम से पैदा होते हैं, वह जीव समझते हैं हम सदा से ही ऐसे हैं, जबकि अक्षर के एक पल में कई मलकूती ब्रह्माण्ड समाप्त होते हैं।

कोट इंड पैदा फना, करे नूर की कुदरत।
ए बल नूर जलाल का, पाव पल की इसारत।।६५।।

अक्षर ब्रह्म की योगमाया अक्षर ब्रह्म के हुकम से करोड़ों ब्रह्माण्ड एक पलक के इशारे से बनाती और मिटाती है।

झूठ तो कछुए है नहीं, सांच कायम साबित।
यों अर्स और दुनीय के, कौन निमूना इत।।६६।।

झूठ तो कुछ है ही नहीं और सत सदा अखण्ड है। इस तरह से अखण्ड परमधाम और मिटने वाली दुनियां की कैसे तुलना करोगे?

Nijanand App

बल अलेखे इन का, कोई इनका निमूना नाहें।
तो निमूना दीजिए, जो होवे कोई क्याहें।। ६७ ।।

अखण्ड की शक्ति अपार है जिसका कोई नमूना नहीं है। यदि कोई सत जैसा दूसरा रूप हो, तो उसकी उपमा दी जाए।

ऐसे अति जोरावर, जो रेहेत हक हजूर।
तो मुख से सब्द ना केहे सकों, इन बल हक जहूर।। ६८ ।।

इतने बलशाली जानवर पारब्रह्म के परमधाम में रहते हैं, इसलिए इनकी ताकत का वर्णन इस जबान से और यहां के शब्दों से करना सम्भव नहीं है।

जो बसत अर्स जिमिएं, या नजीक या दूर।
रात दिन इन के अंग में, बरसत हक का नूर।। ६९ ।।

परमधाम में जो रहते हैं वह पास हों या दूर, उनके अंग में रात-दिन पारब्रह्म का ही तेज समाया रहता है।

यों अर्स के जानवर, सो सारे ही पेहेलवान।
बरसत नूर इनों पर, नजर हक मेहेरबान।। ७० ।।

और इस तरह से परमधाम के सभी जानवर बलशाली हैं। इनके ऊपर पारब्रह्म की नजरे करम ठहरी हैं।

जोत सरूपी जानवर, बल बुध को नाहीं सुमार।
नजरों अमी रस पीवत, अर्स खांवद सींचनहार।। ७१ ।।

यह जानवर पारब्रह्म के तेज (नूर) के ही स्वरूप हैं। जिनकी बल बुद्धि अपार है। वह अपनी नजरों से सदा पारब्रह्म का अमृत रस पान करते हैं।

कौन बल होसी इन का, देखो दिल विचार।
जिनका सका साहेब, पल पल सींचनहार।। ७२ ।।

अब दिल में विचार करके देखो कि जिनको पारब्रह्म पल-पल अमृत रस पिलावें, उनका बल क्या होगा?

ऐसे कोट ब्रह्मांड को, एक फूंके देवे तोड़।
तो भी निमूना इन का, कह्या न जावे जोड़।। ७३ ।।

यहां के करोड़ों ब्रह्माण्डों को अर्श का एक जानवर एक फूंक में उड़ाने की शक्ति रखता है, तो भी इनकी शक्ति की कोई उपमा नहीं है।

उड़ावे कोट ब्रह्मांड को, एक जरे सा जानवर।
उड़ जाएं इन के वाउ सों, जब ए उठावें पर।। ७४ ।।

परमधाम का छोटा सा पक्षी जब अपना पर (पंख) उठाता है तो उसके पर की हवा से ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड उड़ जाते हैं।

ए निमूना अर्स ख्वाब का, देखो तफावत।
देखो अकल असल की, जो होवे अर्स उमत।। ७५ ।।

अब अखण्ड परमधाम और सपने के अन्तर को देखो। परमधाम की जो ब्रह्मसृष्टियां होंगी उनके पास जागृत बुद्धि होगी।

Nijanand App

उमत को देखलावने, बनाए चौदे तबक।
देने पेहेचान गिरो को, यासे जाने हक।।७६ ।।

ब्रह्मसृष्टियों को खेल दिखाने के वास्ते चौदह लोक बनाए जिससे ब्रह्मसृष्टियों को पारब्रह्म की साहबी की पहचान हो जाए।

पावने बुजरकी अर्स की, और बुजरकी खुदाए।
पावने बुजरकी रूहों की, कायम जो इसदाए।।७७ ।।

परमधाम की, पारब्रह्म की, ब्रह्मसृष्टियों की जो सदा से अखण्ड हैं, महिमा बताने के वास्ते ही खेल बनाया है।

सो बुजरकी तो पाइए, जो फिकर कीजे दिल दे।
अर्स लज्जत पाइयत हैं, तेहेकीक किए ए।।७८ ।।

उनकी साहेबी तब जानी जाए जब यहां दिल से विचार करके देखी जाए। तब परमधाम के सुख यहां बैठे मिलते हैं।

सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को।
विचार देखो हादीय की, वानी ले दिलमों।।७९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम खेल में सुख लेने आए हो, सोने के लिए नहीं आए हो। हादी श्री प्राणनाथजी की वाणी को दिल से विचारकर देखो।

गिरो देखत जो ब्रह्मांड, सो तो कछुए नांहें।
सांच निमूना दूसरा, कोई नाहीं अर्स के माहें।।८० ।।

यह जो ब्रह्माण्ड तुम देख रहे हो कुछ नहीं है। परमधाम में कोई और अखण्ड नमूना नहीं है।

जब खावंद अर्स देखिए, तब तो एही एक।
इस बिना और जरा नहीं, जो तूं लाख बेर फेर देख।।८१ ।।

जब परमधाम में श्री राजजी महाराज को देखो तब उस एक की पहचान होती है और दृढ़ता मन में आती है। यहां नाटक बार-बार देखो तो उनके समान यहां कुछ भी नहीं है।

जो कछू अर्स में देखिए, सो सब जात खुदाए।
और खेलौने बगीचे, सो सब जातै के इसदाए।।८२ ।।

परमधाम में जो कुछ भी दिखाई देता है वह सब उसी पारब्रह्म सच्चिदानन्द श्री राजजी महाराज का स्वरूप दिखाई देता है। वहां के खिलौने, बगीचे तथा सब सामग्री अनादि से ही एक जैसी है।

न अर्स जिमिएं दूसरा, कोई और धरावे नाउ।
ए लिख्या वेद कतेब में, कोई नाहीं खुदा बिन काहूं।।८३ ।।

वेद और कतेब में लिखा है कि परमधाम की जमीन में खुदा के सिवाय दूसरा कुछ ऐसा है ही नहीं जिसे वहां से अलग कहा जाए।

और खेलौने जो हक के, सो दूसरा क्यों केहेलाए।
एक जरा कहिए तो दूसरा, जो हक बिना होए इसदाए।।८४ ।।

जो पारब्रह्म के खिलौने हैं वह पारब्रह्म के ही स्वरूप हैं। उनको दूसरा कैसे कहा जाए? दूसरा तो तब कहा जाए यदि उनका स्वरूप पारब्रह्म से अलग हो।

Nijanand App

और पैदा फना जो होत है, क्यों दूसरा कहिए ताए।
ए खेल हैं खावंद के, ए जो चली कतारें जाए।। ८५ ।।

जो पैदा होकर मिटने वाले संसार में मिट जाते हैं उनको भी दूसरा कैसे कहा जाए? यह खेल भी खाविंद का है जो सदा परम्परा से जन्म-मरण के चक्कर में चले जाते हैं।

ए जो दुनियां खेल की, सो चीन्हत हक को नांहें।
ना तो क्यों कहे छल को दूसरा, जो होत पैदा फनाए।। ८६ ।।

यह जो बनने मिटने वाली दुनियां है वह पारब्रह्म को नहीं पहचानती वरना जो पैदा होकर मिट जाता है उसे दूसरा कैसे कहा जाए?

ए जो दुनियां ला इलाह की, ताए क्यों होए चिन्हार।
सो ला ही लिए जात हैं, ज्यों चले चींटी हार।। ८७ ।।

यह दुनियां जो अक्षर ब्रह्म के हुकम से निराकार से पैदा होती है उसे पारब्रह्म की पहचान कैसे हो? वह चींटी की हार कतार की तरह निराकार में ही समा जाती है।

बड़ी बुजरकी हक की, तिन के खेल भी बुजरक।
लिख्या वेद कतेब में, पर इनों न जात सक।। ८८ ।।

पारब्रह्म की बड़ी महिमा है, इसलिए उनके खेल भी महान हैं। वेद कतेबों में सब कुछ लिखा है, परन्तु इस सृष्टि के संशय नहीं मिटते।

झूठ सांच का निमूना, ओ फना ए नेहेचल।
खेल देखे पाइयत हैं, खुद खावंद का बल।। ८९ ।।

झूठ और सत का नमूना कैसा? वह झूठ मिट जाने वाला है और यह अखण्ड सत्ता है। यह तो खेल देखने से पता लगता है कि पारब्रह्म की कितनी महान शक्ति है।

असल आदमियों मिने, कोई पाइए उमत का एक।
ए देखो पटंतर दिल में, दोऊ का विवेक।। ९० ।।

यहां असंख्य मनुष्यों के अन्दर कोई एक ही ब्रह्मसृष्टि दिखाई देती है। अब दिल में विचार करके दोनों के अन्तर को देखो।

अब कहूं मैं तिन को, अर्स खावंद की बात।
खड़ियां तले कदम के, जो हैं हक की जात।। ९१ ।।

अब मैं उन मोमिनों को पारब्रह्म की बात कहती हूं जो पारब्रह्म के ही स्वरूप हैं और उनके चरणों के तले ही मूल-मिलावे में बैठे हैं।

जो उतरे हैं अर्स अजीम से, रूहें और फरिस्ते।
कहिए जात खुदाए की, असल हैं अर्स के।। ९२ ।।

अर्श अजीम से जो रूहें और श्री श्यामाजी खेल में उतरी हैं, वह पारब्रह्म के ही स्वरूप हैं और अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं।

ए जो बात खुदाए की, सुनेंगे भी सोए।
एही हकुल्यकीन, जो अर्स दरगाह के होए।। ९३ ।।

पारब्रह्म की बात को भी वही सुनेंगे जो मोमिन हैं, जिनका यकीन पक्का है और परमधाम के रहने वाले हैं।

Nijanand App

सो फुरमान केहेत है जाहेर, जो उतरे अर्स से।
उतरते अरवाहों सों, कौल किया हक ने।।९४।।

कुरान में स्पष्ट लिखा है कि जो मोमिन परमधाम से उतरकर खेल में आए हैं उनसे पारब्रह्म ने वायदा किया है।

कह्या उतरते हक ने, अलस्तो-बे-रब-कुंम।
फेर कह्या अरवाहों ने, वले न भूलें हम।।९५।।

पारब्रह्म ने रूहों से खेल में उतरते समय कहा था कि मैं ही तुम्हारा खाविंद हूं। तब रूहों ने उत्तर दिया कि बेशक आप हमारे खाविंद है, हम आपको नहीं भूलेंगे।

ए देत अर्स निसानियां, याद आवसी तिन।
सरत करी खावंद ने, उतरते अर्स रूहन।।९६।।

परमधाम की यह बातें (निशान) मोमिनों को ही याद आएंगी, क्योंकि खेल में उतरते समय पारब्रह्म ने आने का वायदा इन्हीं से किया था।

अब जो असल उमत का, ताए देऊं अर्स निसान।
इन विध देऊं साहेदी, ज्यों होए हक पेहेचान।।९७।।

अब जो सच्ची ब्रह्मसृष्टि है उनको परमधाम की पहचान कराती हूं। इस तरह से गवाहियां दूंगी जिससे उन्हें पारब्रह्म की पहचान हो जाए।

कलाम अल्ला की साहेदी, और हदीसें महंमद।
तुमें कहूं तौहीद की, ले रूह अल्ला साहेद।।९८।।

मैं अल्लाह (पारब्रह्म) के वचन कुरान और मुहम्मद साहब की हदीस की गवाही दूंगी और रूह अल्लाह (श्यामा महारानी) की जागृत बुद्धि की वाणी से उस एक पारब्रह्म की पहचान कराऊंगी।

नूर आवें दीदार को, लेने सुख सुभान।
ए कायम सुख देखिए, ए किया वास्ते पेहेचान।।९९।।

अक्षर ब्रह्म पारब्रह्म के दर्शन को रोज आते हैं। यह अखण्ड सुख देखें। यह मोमिनों की पहचान के वास्ते कहे हैं।

नूरें चाह्या दिल में, देखूं इस्क रूहन।
तब तुमें खेल नूर का, दिल में हुआ देखन।।१००।।

अक्षर ब्रह्म ने रूहों का इश्क (प्रेम) देखने की इच्छा की तब तुमको (रूहों को) भी अक्षर का खेल देखने की इच्छा हुई।

खेल किया तुम वास्ते, देखो दिल में आन।
ए झूठ खेल देखाइया, करने हक पेहेचान।।१०१।।

दिल में विचार करके देखो। यह खेल इसलिए तुम्हारे वास्ते बनाया ताकि झूठ का खेल देखकर सत्य की पहचान कर लो।

विचारो रूहें अर्स की, जो देखाई झूठ नकल।
देखो तफावत दिल में, ले अपनी असल अकल।।१०२।।

हे परमधाम की रूहो! अपनी मूल बुद्धि से विचार करके देखो। यह संसार किस तरह झूठा है। तुम्हारे अखण्ड घर (परमधाम) में और इसमें कितना फर्क है।

Nijanand App

ए निमूना देखाइया, करने पेहेचान तुम।
पेहेले चीन्हो आप को, पीछे हादी और खसम।। १०३ ।।

यह झूठा नमूना तुमको दिखाया है ताकि तुम पहले अपने को श्री श्यामाजी की और फिर अपने धनी की पहचान कर सको।

ए खावंद सिर अपने, आपन इन के अंग।
अर्स वतन अपना, कायम हमेसा संग।। १०४ ।।

यह पारब्रह्म ही हमारे धनी हैं और हम इनकी अंगना हैं। अपना घर परमधाम है। जहां हम हमेशा धनी के साथ रहते हैं।

कायम जिमी अर्स की, साहेबी पूरन कमाल।
तो कैसा निमूना इनका, जिन सिर नूर जमाल।। १०५ ।।

परमधाम की जिमी (जमीन) अखण्ड है, जहां के तुम पूर्ण रूप से मालिक हो। ऐसे मोमिन जिनके मालिक पारब्रह्म हों उनका नमूना खेल में कहां मिलेगा?

इत निमूना तो कहिए, जो कोई छोटा होवे और।
कायम जिमी में दूसरा, काहूं न पाइए ठौर।। १०६ ।।

परमधाम में यदि कोई छोटा हो तो इसका नमूना दिया जाए। उस अखण्ड परमधाम में पारब्रह्म के सिवाय कोई और है ही नहीं।

ना निमूना नूर का, ना निमूना बका वतन।
ना निमूना हक का, ना निमूना हादी रूहन।। १०७ ।।

न अक्षर ब्रह्म का, न अखण्ड परमधाम का, न पारब्रह्म का और न श्यामा महारानी (रूह अल्लाह) का और न रूहों का कोई नमूना है जिससे तुलना कर पहचान कराई जाए।

महामत कहे ए मोमिनों, तुम हो बका के।
हक अर्स किया जाहेर, सो सब तुमारे वास्ते।। १०८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम अखण्ड परमधाम के हो और अब तुम्हारे वास्ते ही अखण्ड परमधाम और पारब्रह्म की पहचान बताई है।

॥ प्रकरण ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ ९२७ ॥

अर्स अजीम की हक मारफत-महाकारन

कहूं अर्स अरवाहों को, रूह अल्ला के इलम।
जासों पाइए हकीकत हक की, मुझे हुआ ज्यों हुकम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे अर्श की अरवाहो! श्री श्यामाजी महारानी के जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से कहती हूं। मुझे जिस तरह से हुकम हुआ है उस तरह से हक की हकीकत कहती हूं, ताकि तुम्हें हक की पहचान हो जाए।

और कहूं मैं अर्स की, ज्यों खबर उमत को होए।
सब विध कहूं कायम की, ज्यों समझे सब कोए।। २ ।।

अब पहले मैं परमधाम की बात कहती हूं जिससे मोमिनों को जानकारी मिल जाए कि मैं सारी अखण्ड हकीकत का बयान करूंगी, जिससे सभी कोई आसानी से समझ सकें।

Nijanand App